Wild Mushroom

- A Mushroom or toadstool, is the fleshy, spore bearing fruiting body of a fungus, typically produced above ground, on soil, or on its food source like died wood logs, stems.
- The standard for the name "Mushroom" is the cultivated white button mushroom, *Agaricus bisporus*; hence the word "Mushroom" is most often applied to those fungi that have a stem (Stipe), a cap (Pileus), and gills (Lamellae) on the underside of the cap.
- Mushroom also describes a variety of other gilled fungi, with or without stems, therefore the term is used to describe the fleshy fruiting bodies of some Ascomycota.
- Mushrooms grow in humid and varied temperature conditions. They are seen to grow on grasslands, coniferous forests, deciduous wood dumps, mixed wood forest, manured ground, mossy rocks and acidic soil. They are known by different terms on the basis of their habitats. For instance, species growing on grasslands are known as "Praticolous", on the woodlands as "Silvicolors", on woody debris as "Lignicolous", on dung as "Coprophilous", on mossy rocks as "Muscicolous" and on leaf litter as "humicolous".
- The wild mushrooms are one of the important component of our forest. They have been used as medicine and food since time immemorial. They are known as a rich source of Proteins and Vitamins. Some of the wild mushroom are edible and several other are highly poisonous.
- Mushroom are packed with nutritional value. They are low in calories, are great source of fiber and proteins. Mushrooms are known to be a good source of digestible proteins with protein content above most vegetables and somewhat less than most meats and milk. Protein content can be varying from 10-40% on a dry weight basis. They also provide many important nutrients, including B vitamins, selenium, potassium, copper, and Vitamin D.
- Mushroom can cure epilepsy, wounds, skin diseases, heart ailments, cholesterol reduction, stress, insomnia, asthma, allergies and diabetes, rheumatoid arthritis, cholera besides intermittent fevers, diaphoretic, diarrhoea, dysentery, cold, anaesthesia, liver diseases, gall bladder diseases and used as vermicides.
- Some of the important species of Uttarakhand are *Ganoderma leucidum, Agaricus campestris, Hydnum repandum, Coprinus comatus, Morchella esculenta (Gucchi mushroom), Hericium erinaceus and Cantharellus cibarius.*
- A Project/ Experiment was Initiated in financial year 2019-20, as per approval of Research Advisory Committee (RAC) in August 2019, for Distribution study of Wild mushroom in State of Uttarakhand. The project also aims to facilitate further Research in these species and to create awareness among people. The project has been funded under CAMPA scheme and is initially for a period of five years. The implementing agency is Research circle of Uttarakhand Forest Department. The project has been established on an area of 0.25 hectare, near Patalthod Munsyari, in Pithoragarh Range of Research Circle. A total of 17 species houses under Wild Mushroom Conservation and Demonstration Centre.
- Main species- *Agaricus campestris, Auricularia auricular, Coprinus comatus, Infundibulicybe geotrapa, Infundibulicybe gibba, Ganoderma lucidum, Macrolepiota procera, Pezizza sp., Russula spp etc.*

जंगली मशरूम

- मशरूम एक कवक का मांसल, बीजाणु युक्त फलवाला शरीर है, जो आमतौर पर जमीन के ऊपर, मिट्टी पर या सड़ी गली लकड़ी जैसे अपने खाद्य स्रोत पर उत्पादित होता है।
- प्रचलित नाम मशरूम के लिए मानक अत्यधिक उत्पादित किया जाने वाला सफेद बटन मशरूम, एगरिकस बिस्पोरस है, इसलिए शब्द मशरूम अक्सर उन कवक पर लागू होता है जिनमें एक तना (स्टिप), एक टोपी अथवा छातानुमा संरचना (पाइलस), और टोपी के नीचे पर गिल (लैमेले) होता है।

- मशरूम आर्द्र और विभिन्न तापमान की स्थिति में बढ़ते हैं। वे घास के मैदानों, शंकुधारी जंगलों, पर्णपाती लकड़ी , मिश्रित लकड़ी के जंगल, खाद भूमि, काई युक्त चट्टानों और अम्लीय मिट्टी पर बढ़ते हु, देखे जाते हैं। वे अपने आवासों के आधार पर अलग–अलग नामों से जाने जाते हैं। उदाहरण के लिए, घास के मैदानों पर बढ़ रही प्रजातियों को "पार्टीकोर्लोस" के रूप में, वनों मे उ•ने वालों को "सिल्वीकोर्लोस" के रूप में तथा लकड़ी के बुरादे पर उ•ने वालों को "लिग्नीकोर्लोस" नाम से जाना जाता है।

- जंगली मशरूम हमारे जंगल के महत्वपूर्ण घटक में से एक हैं। उन्हें अनादिकाल से दवा और भोजन के रूप में इस्तेमाल किया जाता रहा है। इन्हें प्रोटीन और विटामिन के समृद्ध स्रोत के रूप में जाना जाता है। कुछ जंगली मशरूम खाद्य हैं और कई अन्य अत्यधिक जहरीले हैं।

- मशरूम पोषण मूल्य से भरे होते हैं। वे कम कैलोरी युक्त, फाइबर और प्रोटीन का बड़ा स्रोत होते हैं। मशरूम को सब्जियों से भी ज्यादा पाचक प्रोटीन का उत्तम स्त्रोत माना जाता है। इनमें पाया जाने वाला प्रोटीन प्रमुख रूप से प्रोटीन के लिए माने जाने वाले मांस और दूध की तुलना में कुछ कम होता है। प्रोटीन की मात्रा सूखे वजन के आधार पर 10 से 40 प्रतिशत तक भिन्न –भिन्न हो सकती है। वे बी विटामिन, सेलेनियम, पोटेशियम, तांबा और विटामिन डी सहित कई महत्वपूर्ण पोषक तत्व भी प्रदान करते हैं।

- मशरूम मिर्गी, घाव, त्वचा रोग, हृदय रोग, कोलेस्ट्रॉल में कमी, तनाव, अनिद्रा, अस्थमा, एलर्जी और मधुमेह, आर्थराइटिस, हैजा के अलावा आंतरायिक बुखार, डायफोरेटिक, डायरिया, पेचिश, सर्दी, एनेस्थीसिया का इलाज, जिगर की बीमारियां, पित्ताशय की बीमारियां और वर्मिसाइड्स के रूप में उपयोग किया जाता है।

- उत्तराखंड की कुछ महत्वपूर्ण प्रजातियां गैनोडर्मा ल्यूसिडम, एग्रिकस कैम्पेस्ट्रिस, हाइडनम रिपारेटम, कोप्रिनस कोमैटस, मॉर्चेला एस्कुलेंटा (गुची मशरूम), हेरिनियम एरिनसियस और कैंथेरेलस सिबियस हैं ।

- उत्तराखंड राज्य में जंगली मशरूम के वितरण अध्ययन के लिए अगस्त 2019 में अनुसंधान सलाहकार समिति के अनुमोदन के अनुसार वित्तीय वर्ष 2019–20 में एक परियोजना/प्रयोग शुरू किया गया था। इस परियोजना का उद्देश्य इन प्रजातियों में भविष्य में अनुसंधान को सुगम बनाना और लोगों में जागरूकता पैदा करना भी है । इस परियोजना को कैम्पा योजना के तहत वित्त पोषित किया गया है और शुरू में पांच वर्षों की अवधि के लिए है । क्रियान्वयन एजेंसी उत्तराखंड वन विभाग का अनुसंधान वृत्त है। अनुसंधान वृत्त के पिथौरागढ़ रेंज में पातलथौड़ मुनस्यारी के पास 0.25 हेक्टेयर क्षेत्र पर परियोजना स्थापित की गई है। वाइल्ड मशरूम कंजर्वेशन एंड डेमोस्ट्रेशन सेंटर के तहत कुल 17 प्रजातियों को संरक्षित किया गया है।

- प्रमुख प्रजातियां– अगेरिकस कैम्पेस्ट्रिस, अरिकुलेरिआ अरिकुलर, कोरटिनेरस मशरूम, गेनोडर्मा लूसिडम, जिम्नोफस कन्फ्लूऐंस, फोमस मशरूम, रैमेरिया प्रजाति, रूसूला प्रजातियां आदि।